CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

2022-2023

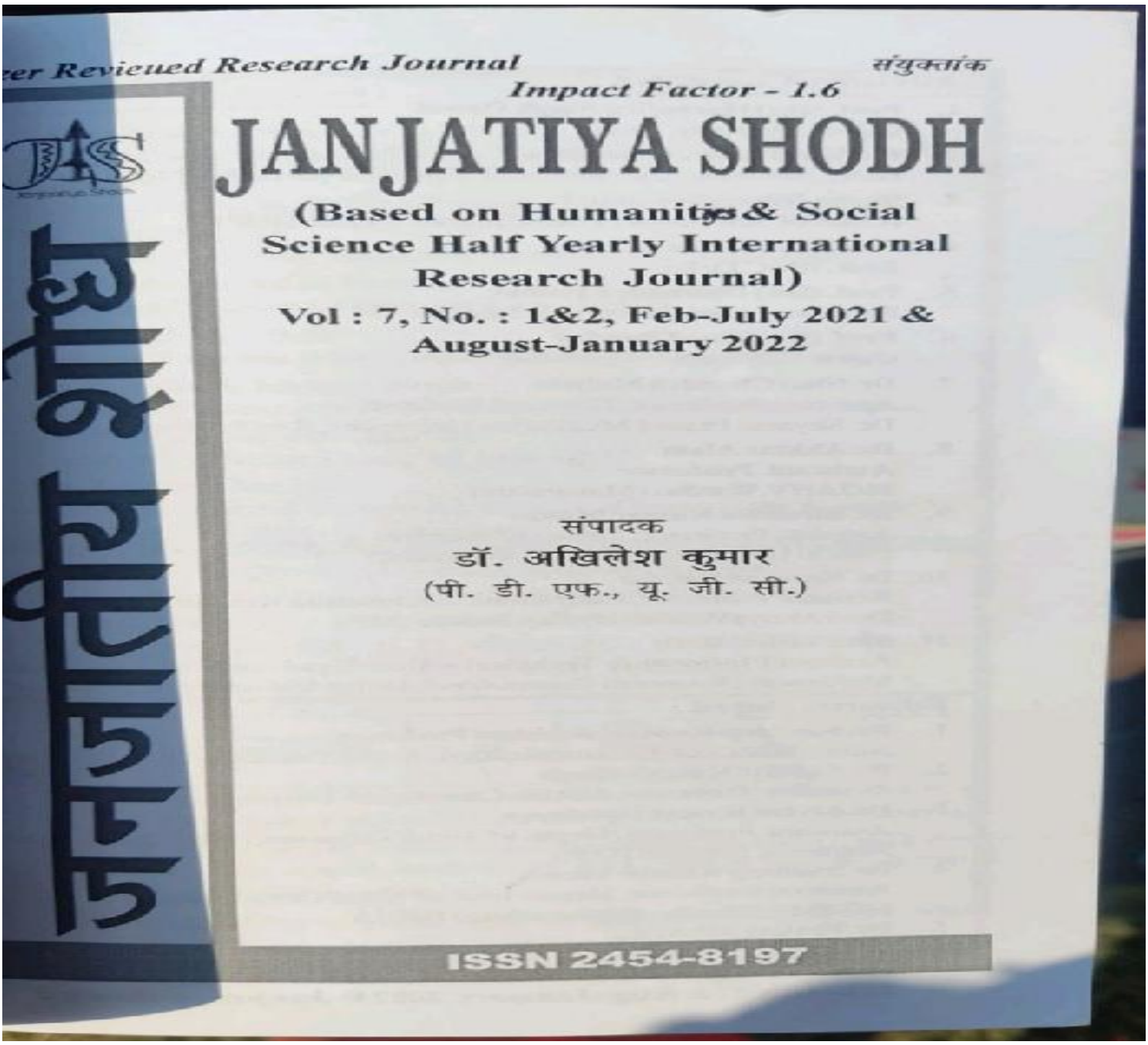

प्राचार्या
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला
पी० जी० कालेज,गोरखपुर

प्रकाशन वर्ष : 2010 जुलाई दिसम्बर 2022
आई.एस.एस.एन. : 0976-8521 वाल्यूम : VII अंक : 1-2
गोरखपुर सोशल साइंटिस्ट
(GORAKHPUR SOCIAL SCIENTIST)
समाजविज्ञान, मानविकी व साहित्य की पूर्व-समीक्षित, अन्तरराष्ट्रीय अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

शिक्षा में अध्यापकीय दक्षताएँ

डॉ० अपर्णा मिश्रा

आधुनिक काल में शिक्षा को उद्यमगत दक्षता के रूप में स्वीकार किया गया है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (N-C-T-E) द्वारा अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में दक्ष आजीविका से अध्यापकीय तैयारी को व्यवहारिक माना गया है। विद्यालयों में छात्रों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। अधिगम (Learning) की समस्या भी जटिल होती जा रही है। अध्यापन के प्रदर्शन को बेहतर और प्रभावशाली बनाने के लिये आवश्यक है कि शैक्षिक समस्याओं का समाधान किया जाए। इस सम्बन्ध में विश्वभर के शिक्षाविदों का यह मानना है कि मात्र पर्याप्त शिक्षक ही शिक्षा का समाधान नहीं है इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कि शिक्षक शिक्षण कला में निपुण, कार्यकुशल, अच्छा ज्ञान, उचित एवं नवीन दृष्टिकोण हों। शिक्षक को कार्यकुशल बनाने के लिये एवं प्रभाविता के लिये व्यवस्थित रूप से दक्षता आधारित शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम लागू करने का प्रावधान किया गया है

N-C-T-E-(National Council of Teachers Education) ने अध्यापक शिक्षा के लिये निम्न दक्षताएँ अध्यापकों के लिये अनिवार्य मानी है–

1. विषय वस्तु सम्बन्धी दक्षताएँ – (Content related competencies)

किसी भी अध्यापक के लिये अपनी विषयवस्तु में पूर्ण अधिकार (Mastery in content) का होना अपरिहार्य है। विषय पर पूर्ण अधिकार रखने वाला व्यक्ति ही अधिगम (Learning) कराने में सक्षम होगा। अध्यापक विषय पर जितना ही अधिकार रखेगा वह विद्यार्थियों के लिये उतना ही प्रिय होगा तथा अध्यापन क्रिया उसके लिये आनन्द की क्रिया होगी। प्रत्येक अध्यापक को एक अच्छा अधिगमकर्ता (A good learner) और एक अच्छा पाठक (A good reader) होना चाहिये। सामूहिक या वैयक्तिक, दोनों ही अधिगम परिस्थितियों में विषयदक्ष अध्यापक ही सफल हो सकता है, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।

2. सम्प्रेषण सम्बन्धी दक्षता – (Transactional Competencies)

शिक्षण, मात्र विषय गत दक्षता से ही सम्पन्न नहीं किया जा सकता है, क्योंकि अध्यापक का मूल कार्य विषयगत ज्ञान का हस्तान्तरण करना होता है। पाठ नियोजन को व्यवहारिक रूप प्रदान करना और उपलब्धि स्तर का आकलन करना इसमें निहित है इसलिये सम्प्रेषण के ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। सम्प्रेषण प्रक्रिया के अभाव में शिक्षण की विधि सही तरीके से प्रदर्शित नहीं हो सकती, जो शिक्षण को स्मृति स्तर से आगे चिन्तन और व्यवहारिक स्तर तक ले जाने में बाधक सिद्ध होगा।

प्राचार्या
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज,गोरखपुर

CHANDRAKANTI RAMAWATI DEVI ARYA MAHILA P.G. COLLEGE
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज
(Accredited by NAAC) दीवान बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)
Mobile No-+91-9076651662 Mail ID- crdpgcollege.gkp@gmail.com
Address: New Colony, Dewan Bazar Gorakhpur -273001

AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL

OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE

A International Indexed & Peer reviewed Open access Journal

www.agpegondwanajournal.co.in | SJIF impact factor : 4.089

Certificate of Publication

This is to certify that

स्वप्निल पांडेय

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

चंद्रकांति रामावती देवी आर्य महिला पीजी कॉलेज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

successfully contributed and published an article entitled

"संयुक्त राष्ट्र संघ के सुरक्षा परिषद में भारत के स्थाई सदस्यता की दावेदारी एवं चुनौतियां"

GONDRAJE DR. BIRSHAH ATRAM

EDITOR IN CHIEF

Volume - 4 | Issue - 01

JANUARY 2023

ISSN(E): 2583-1348

RNI Reg.: MAHMUL/2019/78986

प्राचार्या
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी० जी० कालेज, गोरखपुर

UGC Approved Journal No. 48416 *Impact Factor : 6.0*
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 9, No. 10, October, 2022 *ISSN : 2393-8358*

नरेंद्र मोदी की विदेश नीति– "भारत–अमेरिका संबंधों के विशेष संदर्भ में"

स्वप्निल पाण्डेय
शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थ नगर
डॉ0 दिग्विजय नाथ पाण्डेय
वरिष्ठ आचार्य, एच0आर0 पी0जी0 कालेज, खलीलाबाद

सारांश
भारत दक्षिण गोलार्ध का एक महत्वपूर्ण विकासशील देश है, जो वर्षों से अंतरराष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर रहा है। वहीं दूसरी तरफ विश्व का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका विश्व राजनीति को प्रभावित करने की असीम संकल्पना रखता है। 1974 में भारत नें अपना पहला परमाणु परीक्षण किया तो अमेरिका ने न केवल, इसका विरोध किया बल्कि, भारत पर प्रतिबंध लगा दिए।नरेंद्र मोदी से प्रेरणा लेकर ट्रंप ने भी बुनियादी ढांचे के निर्माण में अपने विकास की लकीर खींची। फरवरी 2020 में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दो दिवसीय भारत यात्रा के दौरान भारत अमेरिका संबंधों में नई ऊर्जा प्राप्त की गई। मोदी– ट्रंप ने मिलकर यह सुनिश्चित किया कि– दहशतगर्दी के खिलाफ वैश्विक लड़ाई में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े रहना होगा अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि मैं हिंदू और इंडिया का बड़ा मुरीद हूं साथ ही उन्होंने नरेंद्र मोदी के विषय में कहा– वह एक महान प्रधानमंत्री और भारत के लिए विकास समर्थक नेता है। कोविड–19 वैश्विक महामारी के भी दोनों देशों के बीच पिछले वर्ष 160 अरब डालर के रिकॉर्ड द्विपक्षीय व्यापार की सराहना भी की गई।

मूल शब्दावली : अंतरराष्ट्रीय राजनीति, भारत और अमेरिका का संबंध, नरेंद्र मोदी, विदेश नीति।

प्रस्तावना–

भारत दक्षिण गोलार्ध का एक महत्वपूर्ण विकासशील देश है, जो वर्षों से अंतरराष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित कर रहा है। वहीं दूसरी तरफ विश्व का सबसे शक्तिशाली देश अमेरिका विश्व राजनीति को प्रभावित करने की असीम संकल्पना रखता है।

विश्व के यह दोनों ही राष्ट्र सर्वश्रेष्ठ प्रजातांत्रिक राष्ट्र के रूप में सफल माने जाते हैं। भारत और अमेरिका दोनों ने ही अपने मजबूत विदेश नीति को अपनाया है, भारत की स्वतंत्रता के पश्चात अमेरिका के साथ संबंध सामान्य थे क्योंकि– अमेरिका स्वयं अंग्रेजों से मुक्त हुआ था जिसके कारण भारत अमेरिका संबंधों में सकारात्मक व्यवहार परिलक्षित हुए ,किंतु जब द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाया, तब अमेरिका स्वयं को इससे दूर रखा और तभी से भारत–अमेरिका संबंधों में कटुता का अभ्युदय हुआ।

निःसन्देह भारत और अमेरिका का संबंध इन परिस्थितियों के अनुसार बनता बिगड़ता रहता है। इसका एक प्रमुख कारण भारत द्वारा सोवियत रूस का समर्थन करना भी है। भारत सोवियत संघ के प्रति अपने झुकाव को आज भी बनाए रखा है, जो अमेरिका को कदाचित पसंद नहीं जिसका यही परिणाम हुआ

प्राचार्या
चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला
पी० जी० कालेज,गोरखपुर